



EXTENSION LECTURE BY

DR. AVINASH PAREEK

COORDINATOR, JAIPUR
PRANT, HISTORY
EDUCATION, SHIKSHA
SANSKRTI UTTHAAN NYAAS
NEW DELHI

मातृभाषा का इतिहास एवं महत्व (अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस)

(21stFebuary,-2023)

REPORT ON EXTENSION LECTURE

ORGANIZED

By

FACULTY OF EDUCATION &

DEPARTMENT OF HISTORY

FACULTY OF HUMANITIES
& SOCIAL SCIENCES

INSTITUTE OF ADVANCED STUDIES

IN EDUCATION
(DEEMED TO BE UNIVERSITY)

SARDARSHAHR, CHURU,

RAJASTHAN - 331403



INSTITUTE OF ADVANCED STUDIES IN EDUCATION

(DEEMED TO BE UNIVERSITY) OF GANDHI VIDYA MANDIR, SARDARSHAHR, CHURU, RAJASTHAN

EXTENSION LECTURE

मातृभाषा का इतिहास एवं महत्व (अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस)

DR. AVINASH PAREEK
COORDINATOR, JAIPUR PRANT, HISTORY
EDUCATION, SHIKSHA SANSKRTI UTTHAAN NYAAS
NEW DELHI

Faculty of Education

DATE: 21.02.2023 TIME: 02:00

PM

शिक्षा संकाय, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), गांधी विद्या मंदिर ,सरदारशहर

एवं

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, जयपुर प्रांत के इतिहास शिक्षा प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर आयोजित " मातृभाषा का इतिहास एवं महत्व "

> विषय पर प्रसार वार्ता आयोजित मुख्य वार्ताकार

> > डॉ अविनाश पारीक

संयोजक, इतिहास शिक्षा, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास , जयपुर प्रांत

दिनांक: 21 फरवरी, 2023

समय: अपराह् :2:00 बजे

प्रसार वार्ता का प्रतिवेदन

विहंगावलोकन

शिक्षा संकाय, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), गांधी विद्या मंदिर ,सरदारशहर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, जयपुर प्रांत के इतिहास शिक्षा प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर आयोजित प्रसार वार्ता " मातृभाषा का इतिहास एवं महत्व "विषय पर दिनांक 21 फरवरी, 2023 को अपराह्र :2:00 बजे शिक्षा संकाय के प्रशाल में आयोजन किया गया। इस प्रसार वार्ता में 200 प्रतिभागियों ने भाग लिया । प्रसार वार्ता के माध्यम से विषय विशेषज्ञ ने विषय वस्तु पर गहन चर्चा की । इसमें शिक्षा संकाय के अधिष्ठाता प्रो. रविंद्र कुमार शर्मा, शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. मनीषा वर्मा एवं शिक्षा विभाग के प्रभारी डॉ प्रमोद कुमार पांडिया थे। डॉ. अल्पना शर्मा ने विषय विशेषज्ञ डॉ अविनाश पारीक का परिचय एवं स्वागत संभाषण प्रस्तुत किया एवं विषय की प्रस्तावना रखी। शिक्षा संकाय के अधिष्ठाता प्रो.आर.के. शर्मा ने डॉ अविनाश पारीक एवं प्रतिभागियों का आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रसार वार्ता का विस्तृत विवरण

संकाय के सभागार में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर आयोजित प्रसार वार्ता " मातृभाषा का इतिहास एवं महत्व "विषय पर मुख्य वार्ताकार एवं सन्दर्भ व्यक्ति शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास इतिहास शिक्षा के जयपुर प्रांत के संयोजक एवं इतिहास विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ अविनाश पारीक ने हिंदी के साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चंद्र की पंक्तियों को उद्धृत करते हुए कहा कि मातृभाषा सहज, स्वयं स्फूर्त, सरल ,सरस, सतत, औपचारिक है जो हमें हमारी लोक संस्कृति से जोड़कर अपनेपन का भाव जगाती है। यह जमीन से जोड़कर हमें अपनी भूमि से प्रेम करना सिखाती है। मातृभाषा को अपनाकर ही

हम भूमिपुत्र बन सकते हैं। जब 1947 में भारत से अलग होकर पाकिस्तान बना तो भौगोलिक रूप से दो हिस्सों में बांटा गया। पहला -पूर्वी पाकिस्तान और दूसरा पश्चिमी पाकिस्तान। पाकिस्तान ने उर्दू में देश की मातृभाषा घोषित किया। लेकिन पूर्वी पाकिस्तान में बांग्ला भाषा अधिक होने के कारण उन्होंने बांग्ला को अपनी मातृभाषा बनाने के लिए संघर्ष शुरू किया। बाद में पूर्वी पाकिस्तान बांग्लादेश बन गया। 21 फरवरी को उनका संघर्ष पूरा हुआ और बांग्लादेश की वर्षगांठ भी इसी दिन से मनाई जाने लगी।

भारत विविध संस्कृति और विभिन्न भाषाओं का देश है। 1961 की जनगणना के मुताबिक, भारत में 1652 भाषाएं बोली जाती हैं। हालांकि एक रिपोर्ट के मुताबिक, फिलहाल भारत में 1365 मातृभाषाएं हैं, जिनका क्षेत्रीय आधार अलग-अलग है। हिंदी दूसरी सबसे लोकप्रिय मातृभाषा है। देश में 43 करोड़ लोग हिंदी बोलते हैं, इसमें 12 फीसद द्विभाषी है। वर्ष 1999 में यूनेस्को ने 21 फरवरी को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के तौर पर मनाने का ऐलान किया था। पहली बार इस दिन को मनाने की शुरुआत बांग्लादेश ने की थी। बाद में वर्ष 2000 से विश्व भर में यह दिन मनाया जाने लगा।

शिक्षा संकाय के अधिष्ठाता प्रो. रविंद्र कुमार शर्मा ने मातृभाषा के महत्व को बताते हुए कहा कि एक कहावत है कि कोस कोस पर पानी बदले चार कोस पर वाणी, भारत में 1652 मातृभाषाएं प्रचलित है लेकिन चालीस भाषाएं ही कार्य रूप में परिणित है। हम सभी मातृभाषा को अपनाने एवं उसका विस्तार करने के लिए संकल्पित हो। शिक्षा विभाग के प्रभारी डॉ प्रमोद कुमार पांडिया ने कहां की वर्तमान में जितनी भी भाषा जानते हो उतना ही श्रेष्ठ है परंतु अपनी मातृभाषा को पोषित करना उतना ही महत्वपूर्ण है। भाषा में सशक्त भावाभिव्यक्ती होती है जो व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण करती है। इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस 2023 की थीम 'बहुभाषी शिक्षा- शिक्षा को बदलने की आवश्यकता' है। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अल्पना शर्मा ने किया।प्रश्लोत्तरी सत्र में प्रतिभागियों ने विषय विशेषज्ञ डॉ अविनाश पारीक से प्रश्ल पूछ कर अपनी जिज्ञासाएं शांत की तथा प्रतिपृष्टि जाहिर की। इस अवसर पर मातृभाषा हस्ताक्षर अभियान भी चलाया गया जिसमें समस्त शिक्षकगण एवं प्रशिक्षणार्थियों ने हिंदी भाषा में हस्ताक्षर कर मातृभाषा के प्रति प्रेम का संदेश दिया।कार्यक्रम का संचालन डॉ. अल्पना शर्मा ने किया। आयोजन संचालन में डॉ. कैलाश पारीक ने तकनीकी सहयोग प्रदान किया।

SOME GLIMPSES OF EXTENSION LECTURE (21stFEBUARY,2023)















NEWS PAPER CUTTINGS





डिजिटल कनेक्ट









अन्तरराष्ट्रीय मातृ भाषा दिवस पर कार्यक्रम

जिले में किसी एक भाषा का पूरी तरह से प्रभाव नहीं



और चार कोस पर धाणी धानि हमां देश धारत में हर एक फोस की दूरी पर वानी का स्वाद बदान जाता है। चार क्रोस पर भाक चनि वानी भी बदात जाती हैं। राजस्थान में वैसे तो राजस्थानी चाफ केल चात में होती यातिए लेकिन यहां हर जगह क्षेत्रीय भाषाओं का प्रभाव है। इसके पाली हर जिले में बड़ा और बड़ा के आस-यास के क्षेत्र की पाचा प्रधानन में है। राजकीय गंधीराध महाविकालन में इस्तिय गंधीराध महाविकालन में इस्तिय विभागान्यक प्रेमेश्वर मंजू कर्या जे सातव कि जिले में किसी एक जेंद्र प्रधान तरह से आए हुए जैकरी प्रधान ने सातव कि जिले में किसी एक



भाषा का पूरी तरह से प्रभाव नहीं है, यहां पर अलग-अलग जगह अलग-अलग भाषा बोली जाती है। हाटलीक यता के लोग खड़ी धाषा का प्रयोग अधिक करते हैं। इसकी यजा अधिक करते हैं। इसको यज्ञत उन्होंने हरियाण राज्य की सीमा जिले से सटी होना चलपा। प्रेफेसर मंजू शर्मा ने चलपा कि जलन अलग

में बहुत सारे ना; शब्द पूल मिल गा है, जिसके कारण रहते बोली विर् के संबंधे ज्यादा नजदीक है। खब्त बदलने के साथ में स्थानीय बोलियें का प्रभाव पहले से कुछ पटा है अव्यक्तिकाल के पालने एका अंग्रेजी से ज्यादा प्रधानी हो रहे हैं। सन्दारप्रकर, रिश्त संस्तप, उत्थ अन्ययन शिक्षा संस्थान (चानित विश्वविद्यालय), गांधी विद्या मंदिर, सरदारक्षर एवं विश्वा संस्कृति जल्बान न्यास, जसपुर प्रांत के

तालक्षप्रधान में संबद्धाय के संबद्धायर में गया। इसमें जिला संबद्धय के विश्वयाध्यक्ष प्रोत्मनीय वर्ग, प्रो. रविंद्र कुमार तर्मा, प्री अधिकात पारीक एवं डॉ प्रमोद कुमार पाँडिय विचार गोप्डी के मुख्य अधिव थे। विचार गोप्डी के मुख्य कक्त शिक्षा संस्कृति उत्पान न्यूस इतिहास विकत के जयपुर प्रांत के संयोजक एवं इतिहास विभाग के विभ्यन्तन्त्रवा प्रां अविनास पार्टक ने कहा कि साम, सतत, औपचारिक है जो हमें हमारी लोक संस्कृति में जीहका अपनेपन का भाव जातती हैं। यह जमीन से ओड़कर हमें अपनी चुनि से प्रेम करना सिखाती है। मातृपाक को अपनाकर ही हम भूमिपुत कर सकते हैं। प्रो. रविंद्र कुमार जर्मा ने

मातृभाषा के महत्व का बताते हुए बहा कि एक बडायत है कि बीम क्रोस पा पानी बदले पार क्रोम पर वाणी, भारत में 1652 मातृशाकाएं प्राथमित है लेकिन प्रान्तिम भाषा ही बदर्य सथ में परिचत है। हम सभी मातृश्वाम की अपनाने एवं उसका विकास करने के लिए संबर्धनार हो। बोरएड. के प्रचारी डॉ प्रमेट कुम्बर परिया ने कहां की बर्ताचन में जितनी पाइच्या न करा को वानस्था से हातान से भागा जा से भागा को सो करा है। यहनू अपनी मातुस्थाण को पाँचित कराना उताना ही महत्त्ववृत्ति है। धाया कराना उताना ही महत्त्ववृत्ति है। धाया प्रचारत से कार्याच्या होती हैं जो प्रचारत के प्रचारत का निर्माण करती है। इस अससर पर मातुस्थाय हस्ताक्षा अधियान भी चलाय गया जिसमें समस्त हिलक एवं प्रतिक्षणार्थियों ने हिन्दी भाग में हरताक्षर कर मातृभाषा के प्रति ग्रेम का संदेत दिखा कार्यक्रम का सकता मंत्रास्त्र महायक्ष आयर्ष श्री क्रिया।

अत्यन तर्मा ने किया। सांख् फोर्ट, ओपीजेएम यूनिवर्मिटी में अंतरराष्ट्रीय मातृथाया विश्वस्थ भागपा गया इस मीक पर व्यवस धांसला हो राजेस कुमार पाठक ने सातृभाक के प्रथर प्रसर तथा सम्मान का संकल्प दिल्ली हुआ कहा कि भाष्ट हमें आपसी प्रम चर्चचरे और मीहार्द मिखाती है हम सभी को अपनी मातु भाग कर सम्मान करना चारिए साथ ही कहा कि चाफ हमारी संस्कृतिक परमाराजी को जीवित स्थाति है बही विष्टी रजिस्ट्रार रवि व्यक्तियान ने कता कि अंतरराष्ट्रीय मातृश्वय विक्रम को मनाने का उदेश्य है कि विश्व में भागाई एवं संस्कृतिक विश्विभाग और बहुभाग को बहाग मिलना चाहिए। कार्यक्रम का आयोजन स्कूल ऑफ एजुकेसन विफर्टमेंट की डॉ सुमम राजे ने



22-02-2023 चुरू

THE PERSON WHEN WELL IN WHITE

THE TERMS SERVING SOFTENING

विचार गोष्ठी में मातृ भाषा को लेकर की चर्चा

सरदारशहर | शिक्षा संकाय, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, जयपुर प्रांत के इतिहास शिक्षा प्रकोष्ठ की तरफ से अंतरराष्ट्रीय मातुभाषा दिवस पर विचार गोष्ठी हुई। मुख्य वक्ता शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास इतिहास शिक्षा, जयपुर के संयोजक व इतिहास विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अविनाश पारीक ने कहा कि मातुभाषा सहज,



स्वयं स्फूर्त, सरल, सरस, सतत, औपचारिक है, जो हमें हमारी लोक संस्कृति से जोड़कर अपनेपन का भाव जागृत करती है। प्रो. रविंद्र

कुमार शर्मा ने मातुभाषा का महत्व बताया। बीएड प्रभारी डॉ. प्रमोद कुमार पांडिया ने कहा कि अपनी मातृभाषा को पोषित करना भी महत्वपूर्ण है। मातुभाषा हस्ताक्षर अभियान भी चलाया गया। कार्यक्रम में शिक्षा संकाय के विभागाध्यक्ष प्रो.मनीषा वर्मा, प्रो. रविंद्र कुमार शर्मा मंचस्थ अतिथि थे। संचालन सहायक आचार्य डॉ. अल्पना शर्मा ने किया।



मातृभाषा का प्रेम हमें अपनी भूमि से प्रेम करना सीखाता हैं -डॉ अविनाश पारीक

न्यूज ज्योति

सरदारशहर। शिक्षा संकाय ,उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास,जयपुर प्रांत के इतिहास शिक्षा प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वावधान में संकाय के सभागार में अंतर्राष्ट्रीय मातुभाषा दिवस पर एक विचार गोष्ट्री का आयोजन किया गया। इसमें शिक्षा संकाय के विभागाध्यक्ष प्रो.मनीषा वर्मा, प्रो. रविंद्र कुमार शर्मा, डॉ अविनाश पारीक एवं डॉ प्रमोद कुमार पांडिया विचार गोष्ठी के मुख्य अतिथिगण थे। विचार गोष्ठी के मुख्य वक्ता शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास इतिहास शिक्षा के जयपुर प्रांत के संयोजक एवं इतिहास विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ अविनाश पारीक ने अपने विचार व्यक्त करते हुए हिंदी के साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चंद्र की पंक्तियों को उद्भृत करते हुए कहा कि मातृभाषा सहज, स्वयं स्फूर्त, सरल ,सरस, सतत, औपचारिक है जो हमें हमारी लोक संस्कृति से जोड़कर अपनेपन का भाव जगाती है। यह जमीन से जोड़कर हमें अपनी भूमि से प्रेम करना सिखाती है। मातृभाषा को अपनाकर ही हम भूमिपुत्र बन सकते हैं। प्रो. रविंद्र कुमार शर्मा ने मातृभाषा के महत्व को बताते हुए कहा कि एक कहावत है कि कोस कोस पर पानी बदले चार कोस पर वाणी,भारत में 1652 मातुभाषाएं प्रचलित है लेकिन चालीस भाषाएं ही कार्य रूप में परिणित है। हम सभी मातुभाषा को अपनाने एवं उसका विस्तार करने के लिए संकल्पित हो।बी.एड्. के प्रभारी डॉ प्रमोद कुमार पांडिया ने कहां की वर्तमान में जितनी भी भाषा जानते हो उतना ही श्रेष्ठ है परंतु अपनी मातृभाषा को पोषित करना उतना ही महत्वपूर्ण है। भाषा में सशक्त भावाभिव्यक्ती होती है जो व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण करती है। इस अवसर पर मातुभाषा हस्ताक्षर अभियान भी चलाया गया जिसमें समस्त शिक्षकगण एवं प्रशिक्षणार्थियों ने हिंदी भाषा में हस्ताक्षर कर मातुभाषा के प्रति प्रेम का संदेश दिया। कार्यक्रम का सफल संचालन सहायक आचार्य डॉ. अल्पना शर्मा ने किया।

मातृभाषा का प्रेम हमें अपनी भूमि से प्रेम करना सिखाता है : डॉ. पारीक

न्यज सर्विस/नवज्योति, सरदारशहर। शिक्षा संकाय, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, जयपुर प्रांत के इतिहास शिक्षा प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वावधान में संकाय के सभागार में अंतर्राष्टीय मातुभाषा दिवस पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें शिक्षा संकाय के विभागाध्यक्ष प्रो.मनीषा वर्मा, प्रो. रविंद्र कुमार शर्मा, डॉ. अविनाश पारीक एवं डॉ. प्रमोद कुमार पांडिया विचार गोष्ठी के मख्य अतिथिगण थे। विचार गोष्ठी के मुख्य वक्ता शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास इतिहास शिक्षा के जयपुर प्रांत के संयोजक एवं इतिहास विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अविनाश पारीक ने अपने विचार व्यक्त करते हए हिंदी के साहित्यकार भारतेंद्र हरिश्चंद्र की पंक्तियों को उद्धत करते हुए कहा



कि मातृभाषा सहज, स्वयं स्फूर्त, सरल, सरस, सतत, औपचारिक है जो हमें हमारी लोक संस्कृति से जोड़कर अपनेपन का भाव जगाती है। बी.एड़. के प्रभारी डॉ प्रमोद कुमार पांडिया ने कहां की वर्तमान में जितनी भी भाषा जानते हो उतना ही श्रेष्ठ है लेकिन अपनी मातृभाषा को पोषित करना उतना ही महत्वपूर्ण है। भाषा में सशक्त भावाभिव्यक्ती होती है जो व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण करती है।इस अवसर पर मातृभाषा हस्ताक्षर अभियान भी चलाया गया जिसमें समस्त शिक्षकगण एवं प्रशिक्षणार्थियों ने हिंदी भाषा में हस्ताक्षर कर मातृभाषा के प्रति प्रेम का संदेश दिया।

10

मातृभाषा का प्रेम हमें अपनी भूमि से प्रेम करना सीखाता है : डॉ. अविनाश पारीक

(आचार्य)। सादलपुर शिक्षा संकाय, उच्च अध्ययन संस्थान विश्वविद्यालय), गांधी सरदारशहर एवं शिका संस्कृति उत्थान न्यास,जयपुर प्रांत के इतिहास शिक्षा प्रकोष्ट के संयुक्त तत्वावधान में संकाय के सभागार में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर एक विचार गोष्टी का आयोजन किया गया। इसमें शिक्षा संकाय के विभागाध्यक्ष प्रो.मनीपा वर्मा, प्रो. रविंद्र कुमार शर्मा, डॉ अविनाश पारीक एवं डॉ प्रमोद कमार पांडिया विचार गोष्टी के मुख्य अतिथिमण थे। विचार गोप्ती के मुख्य वक्ता शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास इतिहास शिक्षा के जयपुर प्रांत के संयोजक एवं इतिहास विभाग के विभागाध्यक्ष अविनाश पारीक ने अपने विचार व्यक्त करते हुए हिंदी के साहित्यकार भारतेंद्र हरिश्चंद्र की



पंक्तियों को उद्धत करते हुए कहा कि मातुभाषा सहज, स्वयं स्फूर्त, सरल, सरस, सतत, औपचारिक है जो हमें हमारी लोक संस्कृति से जोहकर अपनेपन का भाव जगाती है। यह जमीन से जोडकर हमें अपनी भूमि से प्रेम करना सिखाती है। मातृभाषा को अपनाकर ही हम भूमिएत्र चन सकते हैं। प्रो. रविंद्र कमार शर्मा ने मातुभाषा के महत्व को बताते हुए कहा कि एक कहावत है कि कोस कोस पर पानी बदले चार कोस पर वाणी, भारत में 1652 मातुभाषाएं ग्रचलित है लेकिन चालीस भाषाएं ही कार्य रूप में परिणित है। हम सभी मातृभाषा को अपनाने एवं उसका

विस्तार करने के लिए संकल्पित हो। बी.एड. के प्रभारी डॉ प्रमोद कुमार पांडिया ने कहां की वर्तमान में जितनी भी भाषा जानते हो उतना ही श्रेष्ठ है परंतु अपनी मातृभाषा को पोषित करना उतना ही महत्वपर्ण है। भाषा में सशक्त भावाभिव्यकी होती है जो व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण करती है। इस अवसर पर मातभाषा हस्ताक्षर अभियान भी चलाया गया जिसमें समस्त शिक्षकगण एवं प्रशिक्षणार्थियों ने हिंदी भाषा में हस्ताक्षर कर मातभाषा के प्रति प्रेम का संदेश दिया। कार्यक्रम का सफल संचालन सहायक आचार्य हाँ. अल्पना शर्मा ने किया।